Vol 8, Issue 3, 2025 **Impact Factor: 8.535** DOI: https://doi.org/10.31426/ijamsr.2025.8.3.8124

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

संचार माध्यम में गोंड पेंटिंग के प्रभाव का अध्ययन

Shailja Sullere

Department of Journalism and Mass Communication, Mansarovar Global University, Sehore, M.P., India.

Dr. Prachi Chaturvedi

Department of Journalism and Mass Communication, Mansarovar Global University, Sehore, M.P., India.

सारांश

गोंड पेंटिंग भारत की एक महत्वपूर्ण आदिवासी कला शैली है, जिसका मूल मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, ओडिशा, और आंध्र प्रदेश के गोंड जनजातीय समुदायों से जुड़ा हुआ है। विशेष रूप से मध्य प्रदेश के डिंडौरी जिले के पाटनगढ़ गाँव को इस कला का केंद्र माना जाता है, जहाँ यह पारंपरिक रूप से घरों की दीवारों, फर्श, और धार्मिक अनुष्ठानों में सजावट के रूप में विकसित हुई है। संचार माध्यमों के विकास ने गोंड पेंटिंग को न केवल स्थानीय स्तर पर बल्कि राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी पहचान दिलाई है। इस अध्ययन का उद्देश्य संचार माध्यम में गोंड पेंटिंग के प्रभाव का अध्ययन करना है, जिससे यह स्पष्ट हो सके कि आधुनिक संचार माध्यमों ने इस पारंपरिक कला को किस प्रकार प्रभावित किया है और इसके प्रसार में किस हद तक योगदान दिया है। संचार माध्यमों ने गोंड पेंटिंग को एक नई दिशा दी है। पहले यह कला स्थानीय सीमाओं में सिमटी हुई थी, लेकिन आज इंटरनेट, सोशल मीडिया, टेलीविजन, डिजिटल आर्ट प्लेटफॉर्म, और ऑनलाइन मार्केटिंग के माध्यम से यह वैश्विक स्तर पर पहुंच रही है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म जैसे फेसबुक, इंस्टाग्राम, और यूट्यूब ने गोंड कलाकारों को अपनी कला को प्रदर्शित करने और ग्राहकों तक सीधे पहुंचने का अवसर प्रदान किया है। इससे कलाकारों को न केवल अपनी कला को व्यापक स्तर पर दिखाने का मंच मिला, बल्कि उनके आर्थिक सशक्तिकरण में भी वृद्धि हुई। कई कलाकारों ने अपनी गोंड पेंटिंग की कार्यशालाएँ ऑनलाइन संचालित करनी शुरू कर दी हैं, जिससे वे कला प्रेमियों और छात्रों को इस पारंपरिक कला की शिक्षा दे रहे हैं।

मुख्यशब्द- संचार माध्यम, गोंड पेंटिंग, आदिवासी कला शैली, आधुनिक संचार माध्यम, पारंपरिक कला

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

प्रस्तावना

गोंड पेंटिंग की ऐतिहासिक जड़ें प्रकृति, जनजातीय संस्कृति और धार्मिक विश्वासों में गहराई से जुड़ी हुई हैं। यह चित्रकला मुख्य रूप से ग्रामीण जीवन, प्रकृति, वन्यजीवन और पौराणिक कथाओं को चित्रित करती है। परंपरागत रूप से गोंड कलाकार दीवारों और फर्शों पर चित्र बनाते थे, लेकिन समय के साथ इस कला को कागज, कैनवास, कपड़े और अन्य सतहों पर स्थानांतरित कर दिया गया। गोंड पेंटिंग की सबसे बड़ी विशेषता इसकी बारीक और जटिल पैटर्न होती हैं, जो बिंदियों, लहरदार रेखाओं, ज्यामितीय आकृतियों और प्रतीकों के माध्यम से उकेरी जाती हैं। यह शैली न केवल सौंदर्यबोधीय रूप से आकर्षक है, बल्कि इसमें सांस्कृतिक कथाओं और मान्यताओं को भी चित्रित किया जाता है।

डिजिटल युग में गोंड पेंटिंग का उपयोग अब केवल पारंपरिक रूप से चित्रों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह विभिन्न उत्पादों पर भी दिखाई देने लगी है। विभिन्न कंपनियाँ गोंड पेंटिंग डिजाइनों को टेलीविजन विज्ञापनों, फैशन उद्योग, होम डेकोर, और उत्पाद पैकेजिंग में उपयोग कर रही हैं। कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय ब्रांड गोंड पेंटिंग के तत्वों को अपने उत्पादों में शामिल कर रहे हैं, जिससे इस कला की लोकप्रियता और मांग में वृद्धि हो रही है। संचार माध्यमों की मदद से गोंड पेंटिंग के डिजाइनों को टेक्सटाइल, स्टेशनरी, फर्नीचर, मोबाइल कवर और अन्य उपभोक्ता उत्पादों में भी स्थान मिला है। इससे गोंड कला की व्यावसायिक संभावनाएँ बढ़ी हैं और स्थानीय कलाकारों को अपनी आजीविका के नए साधन मिले हैं। इसके अलावा, भारतीय टेलीविजन और फिल्म उद्योग ने भी गोंड पेंटिंग को अपनाया है। कई वृत्तचित्र, टीवी शो और फ़िल्में इस कला को प्रदर्शित कर चुकी हैं। विशेष रूप से, मध्य प्रदेश टूरिज्म और अन्य सरकारी एजेंसियाँ गोंड पेंटिंग को राज्य की सांस्कृतिक पहचान के रूप में प्रस्तुत कर रही हैं। विभिन्न कला मेलों, प्रदर्शनियों और कार्यशालाओं के माध्यम से इस कला को प्रोत्साहित किया जा रहा है। भारत सरकार के 'मेक इन इंडिया' और 'आत्मनिर्भर भारत' जैसे अभियानों ने भी स्थानीय कला रूपों को बढ़ावा देने में सहायता की है, जिससे गोंड पेंटिंग को भी लाभ हुआ है।

गोंड चित्रकला की स्वदेशी संचार प्रणाली

कला दृश्य, श्रव्य या प्रदर्शनात्मक रचनाओं का सृजन है, जो सृजनकर्ता की बौद्धिक या तकनीकी दक्षता को व्यक्त करता है और जिन्हें उनकी सुंदरता या भावनात्मक प्रभाव के लिए सराहा जाता है। पारंपरिक रूप से, कला को तीन मुख्य प्रकारों में वर्गीकृत किया गया है, मूर्तिकला, चित्रकला और वास्तुकला। सत्रहवीं शताब्दी से पहले 'व्यापार', 'विज्ञान' और 'कला' शब्दों का उपयोग एक-दूसरे के स्थान पर किया जाता था, लेकिन आधुनिक समय में, जब सौंदर्य संबंधी विचार अधिक महत्वपूर्ण हो गए, तो ललित कलाओं को सजावटी या व्यावहारिक कलाओं से अलग किया गया। सौंदर्यशास्त्र दर्शन की एक शाखा है, जो कला की प्रकृति और उससे जुड़े सृजनशीलता व व्याख्या जैसे विषयों का अध्ययन करती है। कला का मुख्य उद्देश्य मानवीय भावनाओं की अभिव्यक्ति और उन्हें समझने का माध्यम बनना है। यह सौंदर्य और नैतिक मूल्यों की अभिव्यक्ति का एक महत्वपूर्ण साधन हो सकती है। कलाकार अपने कार्यों के माध्यम से उन चीजों को व्यक्त करते हैं, जो दर्शकों को आकर्षित करती हैं, हालांकि यह अनिवार्य नहीं है। कला को मानवीय स्थिति और अस्तित्व की समझ के रूप में देखा जा सकता है।

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

चित्रकला रंगों को किसी सतह पर उकेरने की एक कला है, जिसके माध्यम से दृश्य बनाए जाते हैं। इसे कैनवास या कागज जैसी सतह पर रंगों का उपयोग करके तैयार किया जाता है। चित्रकला में प्रयुक्त रंग शुष्क या गीले रूप में होते हैं, जैसे पेंट या पेस्टल।

पारंपरिक समाज में जनजातियाँ पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक या रक्त संबंधों के आधार पर बनी समूह होती हैं, जो एक समान संस्कृति और भाषा साझा करती हैं तथा जिनका एक मान्यता प्राप्त नेतृत्व होता है। गोंड जनजाति, जो द्रविड़ समुदाय का हिस्सा है और जिसका इतिहास आर्यपूर्व काल से जुड़ा है, भारत की सबसे बड़ी आदिवासी जनजाति है। यह मुख्य रूप से मध्य प्रदेश और उसके आस-पास के राज्यों में पाई जाती है। लगभग 40 लाख की जनसंख्या के साथ, यह जनजाति मध्य भारत की सबसे बड़ी जनजाति मानी जाती है। हालाँकि इनकी मुख्य आबादी मध्य प्रदेश में केंद्रित है, लेकिन आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़ और ओडिशा में भी गोंड समुदाय के लोग बड़ी संख्या में रहते हैं। 'गोंड' शब्द द्रविड़ भाषा के 'कोंड' शब्द से लिया गया है, जिसका अर्थ 'हरी-भरी पर्वत श्रृंखला' होता है।

गोंडी भाषा गोंड जनजातियों में लोकप्रिय है, जबकि गोंड समुदाय का शेष भाग हिंदी जैसी व्यापक रूप से बोली जाने वाली इंडो-आर्यन भाषाओं का उपयोग करता है। मध्य भारत की गोंड जनजाति पारंपरिक कला रूप गोंड चित्रकला का उपयोग अपने पारंपरिक विषयों को व्यक्त करने के लिए करती है। परंपरागत रूप से, गोंड चित्रकला मिट्टी की दीवारों पर बनाई जाती थी। यह चित्रकला अपनी जटिल और जीवंत डिजाइनों के लिए जानी जाती है, जो स्थानीय पर्यावरण और जनजातीय संस्कृति से प्रेरित होती हैं। गोंड कला के प्रमुख विषयों में क्षेत्र की समृद्ध वनस्पति और जीव-जंतुओं का चित्रण शामिल है, जिनमें मोर, पक्षी, केकड़े और विभिन्न पौराणिक जीव प्रमुख भूमिका निभाते हैं। महुआ का पेड़, जिसे 'जीवन का वृक्ष' माना जाता है, गोंड चित्रों में महत्वपूर्ण स्थान रखता है, इसके फूल, फल, बीज और पत्तियाँ जीवन शक्ति का प्रतीक माने जाते हैं।

गोंड कलाकार परंपरा और आधुनिकता को मिश्रित करते हुए अपने चित्रों में हवाई जहाज, साइकिल और कार जैसी आधुनिक चीजों को भी शामिल करते हैं। उनकी कृतियाँ गोंड समुदाय के मिथकों, लोककथाओं और दैनिक जीवन के बीच गहरे संबंध को दर्शाती हैं, जिनमें जनजातीय अनुष्ठानों और रोजमर्रा की गतिविधियों के दृश्य उकेरे जाते हैं। हिंदू देवताओं और स्थानीय देवी-देवताओं के चित्रण भी आम हैं, जो क्षेत्र की सांस्कृतिक विविधता को दर्शाते हैं। गोंड कला प्रकृति के प्रति गहरे सम्मान से जुड़ी हुई है और यह मानव जीवन और पर्यावरण के आपसी संबंधों को उजागर करती है। इस कला में जटिल डिज़ाइन और जीवंत रंगों का उपयोग न केवल दर्शकों को आकर्षित करता है बल्कि गोंड जनजाति की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित और प्रकट करने का भी माध्यम बनता है।

Vol 8, Issue 3, 2025 **Impact Factor: 8.535** DOI: https://doi.org/10.31426/ijamsr.2025.8.3.8124

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

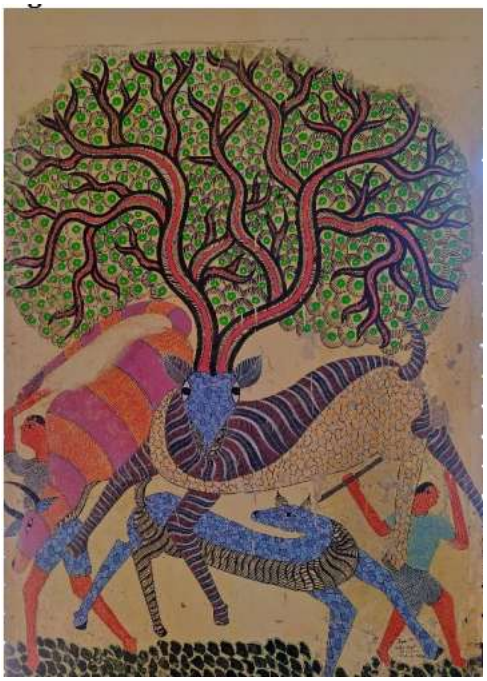

चित्र 1 - कलाकार प्रदीप मरावी की गोंड चित्रकला की प्रदर्शनी

चित्र 1. दर्शाता है कि गोंड चित्रकला एक ''ऑन-लाइन वर्क'' सौंदर्यशैली को प्रदर्शित करती है। रेखाओं की सटीकता दर्शकों पर तुरंत प्रभाव डालती है, इसलिए कलाकार आंतरिक और बाहरी रेखाओं पर विशेष ध्यान देते हैं। रेखाओं का कुशल उपयोग स्थिर चित्रों में गति का आभास कराता है। इसके अतिरिक्त, बिंदुओं और रेखाओं का समावेश गति की अनुभूति को बढ़ाता है और चित्रों को अधिक गहराई प्रदान करता है। गोंड चित्रकला का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू इसका जीवंत और चमकदार रंग पैलेट है, जिसमें सफेद, लाल, नीला और पीला रंग प्रमुखतः होते हैं। परंपरागत रूप से, गोंड कलाकार ये रंग प्राकृतिक स्रोतों से प्राप्त करते हैं, जैसे लकड़ी का कोयला, रंगीन मिट्टी, पौधों का रस, पत्तियां और यहां तक कि गोबर। गोंड चित्रों में पीला रंग स्थानीय ''छुई मिट्टी'' से, भूरा रंग ''गेरू मिट्टी'' से, हरा रंग पत्तियों से और लाल रंग गुड़हल के फूल से प्राप्त किया जाता है। आधुनिक गोंड चित्रकलाएं अब दीवारों और फर्श की बजाय कैनवास पर बनाई जाती हैं। कैनवास का उपयोग इन चित्रों को अधिक विशिष्ट बनाता है, जिससे उन्हें आसानी से ले जाना, संभालना और दीवार पर प्रदर्शित करना संभव होता है। आज के समय में प्राकृतिक रंगों की दुर्लभता के कारण गोंड कलाकार पोस्टर रंगों का भी उपयोग करने लगे हैं।

Vol 8, Issue 3, 2025 **Impact Factor: 8.535** DOI: https://doi.org/10.31426/ijamsr.2025.8.3.8124

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

चित्र 2 - कलाकार शंभू दयाल श्याम की शीर्षकहीन गोंड चित्रकला की प्रदर्शनी

गोंड चित्रकला गोंड जनजाति के दैनिक जीवन, धार्मिक और दार्शनिक विश्वासों तथा जीवन के प्रति उनके दृष्टिकोण को दर्शाती है। गोंड चित्रों में उपयोग किए गए कुछ पैटर्न धिग्ना से प्रेरित होते हैं। फूलों, पेड़ों, देवी-देवताओं और राक्षसों (शैतान) के चित्रों के साथ मौलिक कलाकृतियाँ बनाई जाती हैं। धिग्ना और भित्तिचित्र न केवल सजावट के लिए बनाए जाते हैं, बल्कि इन्हें लोगों के घरों के चारों ओर जमीन और ईंट की दीवारों पर चित्रित किया जाता है, जिससे उनकी धार्मिकता और भक्ति को व्यक्त किया जा सके। ये कलाकार अपनी दीवारों और परिवेश को कैनवास के रूप में उपयोग करते हैं, जिससे एक अद्वितीय पारिस्थितिकी तंत्र सुंदर चित्रों के रूप में उभरता है। क्षेत्रीय उत्सवों और मराही देवी, फुलवारी देवी (काली माता) जैसी देवियों के साथ-साथ करवाचौथ, दीपावली, अष्टमी, नागपंचमी और सांझी जैसे स्थानीय त्योहारों से गोंड चित्रों की प्रेरणा ली जाती है। ये जीवंत रंग देवताओं, मनुष्यों, पशुओं, पक्षियों, घोड़ों, हाथियों, बाघों और अन्य विषयों को यथार्थवादी तरीके से दर्शाते हैं (चित्र 2)। प्रत्येक अवसर के लिए एक नया धिग्ना या भित्तिचित्र बनाया जाता है।

मध्य भारत के विभिन्न क्षेत्रों से गोंड चित्रकला की विशेषताएँ और भिन्नताएँ

हालाँकि गोंड चित्रकला में कुछ सामान्य लक्षण होते हैं, फिर भी यह विभिन्न क्षेत्रों में शैलियों और विषयों के लिहाज से विशिष्ट भिन्नताएँ दिखाती है। यहाँ गोंड चित्रकला की प्रमुख विशेषताएँ और क्षेत्रीय भिन्नताएँ दी गई हैं

सामान्य विशेषताएँ

प्रकृति प्रेरितर: गोंड कला मुख्य रूप से प्रकृति से संबंधित जटिल दृश्य प्रस्तुत करती है, जिसमें जानवरों, पक्षियों, पेड़ों और प्राकृतिक परिदृश्यों को दर्शाया जाता है।

चमकदार रंग पैलेट: गोंड कलाकार एक जीवंत और साहसिक रंग योजना का उपयोग करते हैं, जिससे चित्रों में दृष्टिगत रूप से आकर्षक संयोजन बनता है।

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

डॉट्स और लाइन्स: गोंड कला की एक विशेषता यह है कि इसमें डॉट्स और लाइन्स का उपयोग किया जाता है, जो चित्रों को एक अद्वितीय और दृश्यात्मक रूप से आकर्षक बनाता है।

पौराणिक और लोककथा के विषय: गोंड चित्रकला स्थानीय मिथकों, लोककथाओं और आदिवासी परंपराओं से प्रेरित होती है, जो उन्हें सांस्कृतिक महत्व से समृद्ध करती है।

क्षेत्रीय भिन्नताएँ

मध्य प्रदेश गोंड चित्रकलार: मध्य प्रदेश की गोंड चित्रकला पर कलचुरी वंश का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है, जो कभी इस क्षेत्र पर शासन करता था। इस प्रभाव का प्रदर्शन चित्रकला की जटिलताओं और अधिक विस्तृत संयोजनों में होता है। मध्य प्रदेश के गोंड कलाकार अक्सर सफेद स्थानों का उपयोग करते हैं, जिससे एक विपरीतता उत्पन्न होती है और मुख्य विषय पर ध्यान केंद्रित होता है, जिससे एक विशिष्ट शैली बनती है।

छत्तीसगढ़ गोंड चित्रकला: छत्तीसगढ़ की गोंड चित्रकला अपने सरल लेकिन साहसिक डिज़ाइनों के लिए जानी जाती है। प्रमुख रेखाएँ और डॉट्स, साथ ही सीमित रूप से उपयोग किए गए रंग, इस शैली की प्रमुख विशेषताएँ हैं। छत्तीसगढ़ के गोंड कलाकार अक्सर अपने चित्रों में आदिवासी जीवन, रीति-रिवाजों और दैनिक गतिविधियों को चित्रित करते हैं, जो उनके चित्रों को एक विशिष्ट और संस्कृति केंद्रित रूप प्रदान करते हैं।

महाराष्ट्र गोंड चित्रकला: महाराष्ट्र में गोंड कला मराठा संस्कृति से प्रभावित है, जो कि युद्धक्षेत्रों और शाही विषयों के चित्रण में दिखता है, जिससे एक विशिष्ट क्षेत्रीय स्वाद उत्पन्न होता है। महाराष्ट्र के गोंड चित्रों में प्राय: ज्यामितीय पैटर्न शामिल होते हैं, जो कला को एक नया आयाम देते हैं और गोंड परंपरा में इसे अलग बनाते हैं।

आंध्र प्रदेश गोंड चित्रकला: आंध्र प्रदेश की गोंड कला पर वारली कला का प्रभाव देखा जा सकता है, जो एक और आदिवासी कला रूप है। इस प्रभाव को ज्यामितीय रूपों और पैटर्नों के उपयोग में देखा जा सकता है, जो इस क्षेत्रीय रूप को विशिष्ट बनाते हैं। आंध्र प्रदेश के गोंड चित्रों में उनके संयोजनों में संतुलन और सामंजस्य की भावना दिखती है, जो कला को एक विशेष सौंदर्यात्मक गुण प्रदान करती है।

यह महत्वपूर्ण है कि प्रत्येक क्षेत्र में व्यक्तिगत गोंड कलाकार अपनी विशिष्ट शैलियाँ और व्याख्याएँ प्रस्तुत करते हैं, जिससे एक विशिष्ट क्षेत्रीय शैली के भीतर भी विविधता उत्पन्न होती है। गोंड कला ने भारत और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान प्राप्त की है और यह अपनी समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर को बनाए रखते हुए निरंतर विकसित हो रही है।

संचार के आधुनिक साधनों में गोंड चित्रकला की भूमिका

गोंड चित्रकला परंपरागत रूप से प्रकृति, जीव-जंतुओं, धार्मिक मान्यताओं और लोककथाओं को चित्रों के माध्यम से जीवंत करती है। आज के युग में जब संचार के आधुनिक साधन जैसे टेलीविजन, सोशल मीडिया, डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म, विज्ञापन और फिल्में लोगों की अभिव्यक्ति और संस्कृति के प्रचार के महत्वपूर्ण माध्यम बन चुके हैं, तब गोंड चित्रकला ने भी इन माध्यमों में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराई है।

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

गोंड चित्रों की जीवंतता, रंगों की विविधता और प्रतीकात्मक अभिव्यक्तियाँ आज विज्ञापनों, एनिमेशन फिल्मों, डिज़ाइन प्रोजेक्ट्स और डिजिटल कंटेंट में दिखाई देने लगी हैं। यह चित्रकला न केवल सौंदर्य और आकर्षण का माध्यम बन गई है, बल्कि एक सांस्कृतिक संदेशवाहक के रूप में भी कार्य कर रही है। अनेक सामाजिक और पर्यावरणीय संदेशों को गोंड शैली में प्रस्तुत कर लोगों को जागरूक किया जा रहा है। इसके अलावा, डिजिटल आर्ट, वेबसाइट डिज़ाइन, मोबाइल एप्स और सोशल मीडिया पर इन चित्रों की बढ़ती उपस्थिति, न केवल इस परंपरा को नया जीवन दे रही है, बल्कि जनजातीय समुदाय को वैश्विक मंच पर पहचान भी दिला रही है।

गोंड चित्रकला की यह आधुनिक यात्रा न केवल सांस्कृतिक संरक्षण की दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह यह भी दर्शाती है कि पारंपरिक कला कैसे आधुनिक संचार माध्यमों से जुड़कर एक प्रभावशाली, संवादात्मक और जीवंत अभिव्यक्ति बन सकती है। यह भूमिका विशेष रूप से युवाओं को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ने और परंपराओं को समकालीन संदर्भों में पुनःस्थापित करने की दिशा में एक सशक्त पहल है।

टेलीविजन, फिल्म और डिजिटल मीडिया में गोंड चित्रकला की उपस्थिति

टेलीविजन, फिल्म और डिजिटल मीडिया में गोंड चित्रकला की उपस्थिति न केवल इसकी सांस्कृतिक पुनर्स्थापना का प्रमाण है, बल्कि यह दर्शाता है कि परंपरागत कलाएं भी आधुनिकता के साथ जुड़कर वैश्विक संवाद का माध्यम बन सकती हैं। यह उपस्थिति उन कलाकारों के लिए भी एक प्रेरणा है जो अपनी जड़ों से जुड़े रहते हुए विश्व मंच पर अपनी पहचान बनाना चाहते हैं। गोंड चित्रकला अब सिर्फ दीवारों तक सीमित नहीं रही, बल्कि वह एक जीवंत, संवादात्मक और बहुआयामी सांस्कृतिक प्रतीक बन चुकी है।

टेलीविजन पर गोंड चित्रकला की उपस्थिति कई रूपों में देखी जा सकती है। जनजातीय जीवन पर आधारित डाक्यूमेंट्री, शैक्षिक कार्यक्रमों और लोक संस्कृति से जुड़े धारावाहिकों में इस चित्रकला को न केवल एक दृश्यात्मक सौंदर्य के रूप में प्रयोग किया जाता है, बल्कि इसकी मदद से गोंड समुदाय के इतिहास, परंपराओं और विश्वासों को भी प्रस्तुत किया जाता है। यह चित्रकला टेलीविजन की पृष्ठभूमि डिज़ाइन, इंट्रो सीन और थीम ग्राफिक्स में सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक बन चुकी है। भारत सरकार के विभिन्न जनसंचार कार्यक्रमों जैसे 'लोकसभा टीवी', 'राज्यसभा टीवी' और 'डीडी भारत' जैसे चैनलों पर गोंड चित्रकला आधारित कार्यक्रमों का प्रसारण भी इसकी सांस्कृतिक महत्ता को रेखांकित करता है।

फिल्मों में गोंड चित्रकला का उपयोग और भी रचनात्मक रूपों में हो रहा है। विशेषकर स्वतंत्र सिनेमा और डॉक्यूमेंट्री फिल्मों में, गोंड चित्रकला को विषयवस्तु और सौंदर्यबोध दोनों के रूप में अपनाया गया है। कुछ फिल्मों में इस कला को एनिमेशन के माध्यम से जीवंत रूप में दर्शाया गया है, जहाँ चित्रों के पात्र और प्रतीक चलते-फिरते दिखाई देते हैं। इससे न केवल कथा में गहराई आती है, बल्कि दर्शकों को एक नई दृश्यात्मक अनुभूति भी होती है। कुछ फिल्म निर्माताओं ने गोंड कलाकारों के जीवन पर केंद्रित फिल्में बनाई हैं, जिससे इस कला को एक सामाजिक और ऐतिहासिक संदर्भ में समझने का अवसर मिलता है।

डिजिटल मीडिया में गोंड चित्रकला की उपस्थिति सबसे व्यापक और प्रभावशाली है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म जैसे इंस्टाग्राम, फेसबुक, यूट्यूब और पिनटेरेस्ट पर गोंड कला के समर्पित पेज, चैनल और डिजिटल आर्ट गैलरी

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

मौजूद हैं, जहाँ कलाकार अपनी कृतियाँ प्रदर्शित करते हैं और दर्शक उनसे जुड़ते हैं। डिजिटल उपकरणों की सहायता से पारंपरिक गोंड चित्र अब डिजिटल पेंटिंग के रूप में प्रस्तुत किए जा रहे हैं, जिससे उनकी पहुंच वैश्विक स्तर तक हो गई है। इसके अतिरिक्त, गोंड चित्रकला को NFT (Non-Fungible Token) के रूप में भी अपनाया जा रहा है, जिससे कलाकारों को वैश्विक बाज़ार में अपनी कलाओं को बेचने और आर्थिक रूप से सशक्त होने का अवसर प्राप्त हो रहा है।

निष्कर्ष

संचार माध्यमों ने गोंड पेंटिंग को एक नई पहचान और व्यापक पहुंच प्रदान की है। सोशल मीडिया, डिजिटल प्लेटफॉर्म, टेलीविजन, और विज्ञापनों के माध्यम से इस कला को न केवल भारत में बल्कि पूरी दुनिया में प्रसिद्धि मिली है। पाटनगढ़ के कलाकारों ने इस अवसर का लाभ उठाते हुए अपनी कला को वैश्विक स्तर पर पहुँचाया है, जिससे उनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है। हालाँकि, इस कला की मौलिकता को बनाए रखने और पारंपरिक शिल्पकारों को प्रोत्साहित करने के लिए निरंतर प्रयासों की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. राव, अंकिता सिंह (2018), आदिवासी चित्रकला ''गोंड'' - भारतीय धरोहर के सार को व्यक्त करना। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एप्लाइड होम साइंस, प.9.
2. कौर, राजिंदर और गुप्ता, इला (2016), फूलकारी में मोर का रूपांकनः एक समग्र विश्लेषण। ज्भ्।।च् जर्नल 2016, पाकिस्तान का जन इतिहास, प.248.
3. अर्नहाइम, रूडोल्फ (1954), कला और दृश्य संवेदनाएँ। लॉस एंजेल्सः यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस बर्कलेः लंदन, प.5.
4. गोस्वामी, पी. मनाश (2018), गोंड चित्रकलारू समकालीन परिप्रेक्ष्य का अध्ययन। इंडियन जर्नल ऑफ कम्युनिकेशन रिव्यू। एएमयू, प.34.
5. जेमीसन, हैरी (2007), दृश्य संचाररू जो दिखाई देता है उससे कहीं अधिक। ब्रीस्टनः इंटेलेक्ट बुक्स यूके, प.19.
6. सीडम, इरविंग (2006), साक्षात्कार करना जैसा गुणात्मक शोधः शिक्षा और सामाजिक विज्ञान में शोधकर्ताओं के लिए मार्गदर्शिका। आम्सटर्डमः टीचर्स कॉलेज प्रेस यूके, प.12.
7. काफ़ारू, अबीदुन बाबातुंडे (2014), चित्रकला की सौंदर्यशास्त्र, संकेत, प्रतीक, रूपांकन और पैटर्न का अन्वेषणः नाइजीरिया के तटीय योरुबा क्षेत्र का अध्ययन। यूनिवर्सिटी ऑफ नॉर्थम्पटनरू नाइजीरिया, प.166,
8. बोरा, शोभा और साक्षी (2016), गोंड चित्रकला में हाल की प्रवृत्तियाँ। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एप्लाइड होम साइंस वॉल्यूम 3 (7-8), जुलाई और अगस्त (2016)रू 279-28, प.282.
9. स्टोक्केट्टी, कुक्कोनेन (2011), उपयोग में छवियाँः दृश्य संचार के आलोचनात्मक विश्लेषण की दिशा में। आम्सटर्डम/फिलाडेल्फियाः जॉन बेंजामिन्स पब्लिशिंग कंपनी। यूके, प.3.
10. स्त्विमेल, कातजा (2007), प्रशिक्षण संवेदनाएँ - डिज़ाइन शिक्षा में हृदय। डिज़ाइन शिक्षाः परंपरा और आधुनिकता। एनआईडीए प.122.

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

11. पिंग, यांग, (2024), दृश्य संचार आधारित डिजिटल मीडिया इंटरएक्टिव तेल चित्रकला कला प्रदर्शनी विधि। सिग्नल, इमेज और वीडियो प्रोसेसिंग। 18(8-9), प.1-12।.
12. खरवार, दीपक, (2024), गोंड जनजातियों का सामाजिक, आर्थिक जीवनः एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (उत्तर प्रदेश के सोनभद्र जिले के विशेष संदर्भ में)। पूर्व देव सामाजिक विज्ञान जर्नल, प.3049-64.
13. सिंहल, समर्थ, (2024), चित्रकला से चित्रकिताब तकः भज्जु श्याम की अंदरूनी आदिवासी कला। आईएएफओआर जर्नल ऑफ आर्ट्स एंड ह्यूमैनिटीज। 11(2), प.93-105.
14. फेइफेई, डुआन और इस्माइल, इस्सरेज़ल और रामली, इशाक, (2024), आधुनिक चीनी बोनलेस चित्रकला की बनावट विशेषताओं पर चावल कागज का प्रभाव। आइडियोलॉजी जर्नल, 9(2), प.84-94.
15. झाओ, युगुआंग और स्टम्पल, जेरेन और रिडर, हुइब और विंजटेस, मार्टन, (2024), विभिन्न मीडिया में सामग्री की धारणाकृतेल चित्रकला और उत्कीर्णन में अनुभव किए गए गुणों की तुलना। -धारणा। 15(4), प.101-121.